2

भारत का भौगोलिक परिवेश और प्रागैतिहासिक सभ्यताएँ

किसी भी देश अथवा क्षेत्र के भूगोल की जानकारी के बिना हम वहाँ के इतिहास को नहीं समझ सकते। वहाँ के लोगों का इतिहास उस स्थान के भूगोल और वातावरण से प्रभावित होता है जिसमें वे निवास करते हैं। किसी भी स्थान के प्राक तिक भूगोल और परिवेशगत परिस्थितियों में वहाँ की जलवायु, मिटट्ी की किस्म, जल–संसाधन और अन्य स्थानीय विशेषताएँ सम्मिलित होती हैं। यही विशेषताएँ किसी क्षेत्र के परिवेश का स्वरूप, वहाँ के जनसमुदाय, खाद्य पदार्थ, मानव व्यवहार और खानपान का ढाँचा निर्धारित करती हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के क्षेत्र विभिन्न भौगोलिक विशेषताओं से भरपूर हैं जिन्होंने यहाँ के इतिहास को अत्यधिक प्रभावित किया है।

भौगोलिक द ष्टि से विचार करें तो प्राचीन काल में भारतीय उप–महाद्वीप में वर्तमान भारत, बांगलादेश, नेपाल, भूटान और पाकिस्तान शामिल थे। भौगोलिक विविधताओं के आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप को मुख्यतया निम्नलिखित क्षेत्रो में विभाजित किया जा सकता है:

(1) हिमालय क्षेत्र

(2) उत्तर भारत का नदी–तटीय मैदानी क्षेत्र

(3) प्रायद्वीपीय भारत

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- भारतीय उपमहाद्वीप के भौतिक विभाजन की व्याख्या कर सकेंगे;
- प्रत्येक क्षेत्र की भिन्न विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे;
- कुछ भौगोलिक क्षेत्र अन्य क्षेत्रों से अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों है, इसकी जानकारी प्राप्त दे सकेंगे;
- पर्यावरण का स्वरूप को समझा सकेंगे;
- विभिन्न क्षेत्रों की भौगाोलिक विशेषताओं और ऐतिहासिक विकास में परस्पर संबंध स्थापित कर सकेंगे;

- प्रागैतिहास, प्रागैतिहासिक सभ्यताएँ और लघु पाषाण (माइक्रोलियस) शब्दों को परिभाषित कर सकेंगे;
- पुरा पाषाण युग (पैलियालिथिक) में उपयोग किए गए औजारों के आधार पर आरम्भिक, मध्यम और उत्तर पुरा पाषाण युग में अन्तर कर सकेंगे;
- जलवायु और प्रयुक्त औजारों के आधार पर मध्य पाषाण–युग को संक्रमण काल के चरण के रूप में स्थापित कर सकेंगे;
- नव–पाषाण युग और इसकी प्रमुख विशेषताओं को परिभाषित कर सकेंगे; और
- प्रागैतिहासिक कलाओं का परिचय दे सकेंगे।

2.1 हिमालय क्षेत्र

हिमालय पर्वतीय क्षेत्र विश्व की विशालतम और उच्चतम पर्वतीय श्रंखलाएँ है। यह औसतन 2,400 कि.मी. लंबी है (देखे मानचित्र 2.1) इन श्रंखलाओं ने न सिर्फ

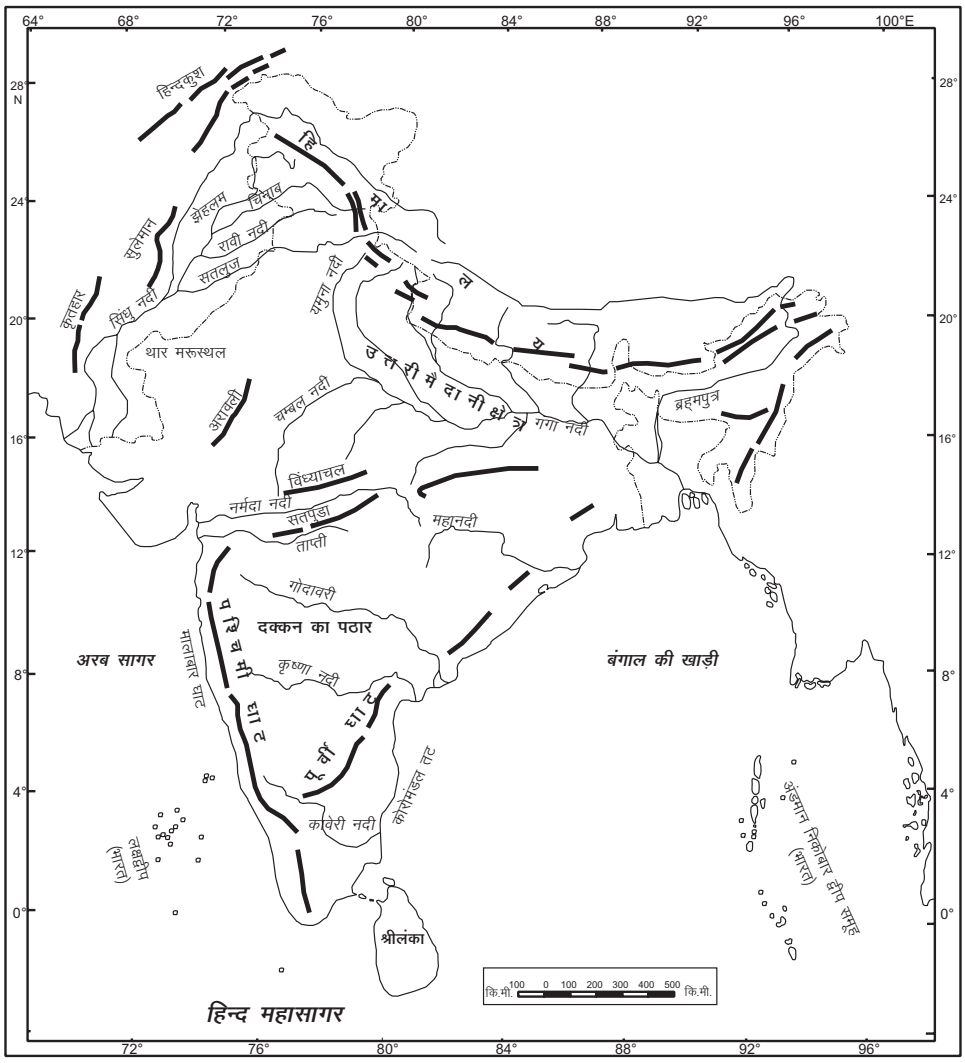

मानचित्र 2.1 विशाल उत्तरी पर्वत श्रं खलाए

हमलावारों को आने से रोका बल्कि उत्तर की ओर से आने वाली मानसूनी शीत लहर से भी हमारी सुरक्षा की। यह समुद्र से उठने वाली मानसूनी हवाओं को रोककर उत्तरी मैदानी क्षेत्रों में वर्षा का कारण बनती है। तथापि कुछ ऐसे पर्वतीय दर्रे है, जिनसे गुजर कर हमलावर, व्यापारी और धर्मप्रचारक यहाँ पहुँचे यद्यपि यह जटिल क्षेत्र है। इन्होंने प्राचीन काल में मध्य एशिया, चीन और तिब्बत जैसे देशों से सांस्क तिक संबंध विकसित करने में सहायता की।

उत्तर–पश्चिमी दिशा में विभाजित, हिमालय श्रंखलाओं में भारतीय मैदानी क्षेत्रों को अफ़गानिस्तान के जरिए ईरान और मध्य एशिया को जोड़ने वाले मुख्य मार्ग शामिल हैं। इनमें गोमल, बोलन और ख़ैबर–पास शामिल हैं। ग्रीक, शक, कुषाण, हूण और अन्य विदेशी जनजातियाँ ने इन्हीं मार्गों के जरिये भारत में प्रवेश किया। इसी प्रकार बौद्ध धर्म और अन्य भारतीय विशिष्टताएँ इन्हीं पर्वतीय मार्गो के जरिये अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुँची।

2.2 उत्तर भारत का नदी तटीय मैदानी क्षेत्र

हिमालय क्षेत्र ने भारत को सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों से प्रभावित तीन नदी तंत्र उपलब्ध कराए हैं। इन नदियों ने अपने–अपने क्षेत्रों को उपजाऊ बनाने के साथ–साथ यहाँ के स्थायी निवासियों और हमलावरों को भी आकर्षित किया।

सिंधु नदी के मैदानी क्षेत्र में पंजाब और सिंध सम्मिलित हैं। सिंधु नदी की सहयोगी नदियों की सिंचाई ने इस भू–क्षेत्र को एक विस्त त उपजाऊ मैदान बना दिया है जिसके कारण यह क्षेत्र इस उप–महाद्वीप का खाद्य–केन्द्र बन गया है। इस कथन का यह कारण है, क्योंकि यह क्षेत्र गेहूँ की खेती के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। पंजाब की सामरिक स्थिति और सम द्धि ने प्राचीन काल से ही विदेशी हमलावरों को आकर्षित किया है। सिंध क्षेत्र में निचली सिंधु घाटी और डेल्टा शामिल हैं। सिंधु नदी के मैदान में ही इस उपमहाद्वीप में पहली बार हड़प्पा संस्क ति की शहरी सभ्यता के विकास की झाँकी देखने को मिली। (देखें पाठ 3)

गंगा की घाटी में सिंधु क्षेत्र की तुलना में अधिक वर्षा होती है और यह क्षेत्र अधिक नमी वाला है। गंगा के मैदानी क्षेत्रों को तीन उप–क्षेत्रों में बाँटा गया है। वे हैं– ऊपरी, मध्य और निम्न। गंगा नदी के ऊपरी क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्र शामिल हैं। प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र में सांस्क तिक विकास दिखाई देता है। उत्तर वैदिक युग में यह आर्यों का निवास स्थान बना जब यहाँ रहकर उन्होंने खेती–बाड़ी की। मध्य गंगा का मैदानी क्षेत्र अधिक उपजाऊ है, उसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार शामिल हैं। यह वह क्षेत्र है जहाँ छठी सदी ईसा पूर्व कौशल, काशी और मगध जैसे महाजनपद (प्रदेशीय प्रांत) क्षेत्र स्थापित हए। भारत के दो प्रमुख धर्मों, जैन और बौद्ध धर्म का जन्म भी इन्हीं क्षेत्रों में ही हुआ।

गंगा के निचले मैदानी क्षेत्रों में बंगाल क्षेत्र शामिल है। इसका उत्तरी क्षेत्र ब्रह्मपुत्र द्वारा सिंचित क्षेत्र है। भारी वर्षा से यहाँ घने जंगल और दलदली भूमि विकसित हो गई, जिसके परिणामस्वरूप शुरू–शुरू में यहाँ आवास विकसित करने में कठिनाइयाँ पैदा

हुई, लेकिन इसके तटीय क्षेत्र इस उप–महाद्वीप के अन्य क्षेत्रों और दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों के बीच भी, परस्पर संचार के महत्त्वपूर्ण मार्ग साबित हए। ताम्रलीप्ति अथवा तामलुक इस क्षेत्र का एक प्रमुख बन्दरगाह था जिसने व्यापारिक गतिविधियों में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पूर्वी भारत को महानदी और इसकी अन्य धाराओं द्वारा विकसित तटीय मैदानों के रूप में पहचाना जाता है। इस क्षेत्र के उपजाऊ तटीय क्षेत्र ने क षि, समाज और संस्क ति के विकास में बहुत योगदान दिया। नंद और मौर्य राजवंशों के काल में (चौथी सदी ईसा–पूर्व) यह गंगा सभ्यता के संपर्क में आया। 1000 ई. (ईसा पश्चात) के आसपास उड़ीसा की अपनी भाषायी और सांस्क तिक पहचान विकसित होनी शुरू हुई।

पश्चिमी भारतीय क्षेत्र में राजस्थान और गुजरात के आधुनिक प्रदेश सम्मिलित हैं। यह अपनी काली मिटट्ी की वजह से विशिष्ट पहचान रखता है जो कपास की खेती के लिए बहुत ही उपयोगी है। अर्ध–शुष्क क्षेत्रों से घिरा राजस्थान का थार मरुस्थल गंगा के मैदानी क्षेत्रों की तरह उपजाऊ नहीं था। इसलिए इस क्षेत्र को क षि के लिए अधिक उपयोगी नहीं समझा गया। तथापि, बाद में 8वीं सदी में, रहट यांत्रिकी की सिंचाई के विकास के बाद यहाँ अनेक प्रकार की आबादी का निवास शुरू हुआ। राजस्थान अनेक राजपूत वंशों का भी मूल निवास स्थल रहा है। गुजरात में साबरमती, माही, नर्मदा और ताप्ति नदियों के उपजाऊ मैदानों के कारण यहाँ बहुत ही सम द्धि आई। गुजरात के अत्यधिक लम्बे तटीय क्षेत्र ने भी अपने बन्दरगाहों के ज़रिये अन्य देशों से संबंध विकसित करने में भारी सहयोग दिया। इस क्षेत्र के बहुत ही महत्त्वपूर्ण समुद्रतटीय बन्दरगाह रहे हैं भृगुकच्छ या भड़ूच (भरोच)।

2.3 प्रायद्वीपीय भारत

प्रायद्वीपीय भारत में दक्षिण का पठार और दक्षिण भारत के समुद्रतटीय मैदानी क्षेत्र शामिल हैं (मानचित्र 2.2)। यह पठार विंध्य पर्वत श ृंखला के दक्षिण में स्थित है। इसे तीन मुख्य क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। जिनमें अधिकतर महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक के आधुनिक प्रदेश हैं। तांबे और पत्थर के औजारों का उपयोग करने वाले लोगों के ताम्र–पाषाण–युगीन स्थल ज्यादातर यहीं पर पाए गए हैं। कर्नाटक में दक्षिण पश्चिमी दक्कन क्षेत्र शामिल है। यह जल और अन्य संसाधनों की उपलब्धता के लिए अधिक सुविधाजनक रहा है। चावल की खेती के कारण रायचूर दोआब क्षेत्र को, दक्षिण भारत का चावल–केन्द्र कहा जाता है। यह क्षेत्र विभिन्न बादशाहों में परस्पर युद्व का कारण रहा है। प्रागैतिहासिक काल से ही इन क्षेत्रों में लोगों का निवास रहा है।

पठार क्षेत्र में भी पश्चिमी और पूर्वी घाटों पर पहाड़ी भू–प्रदेश है। ये पहाड़ियां पश्चिमी तट पर पश्चिमी घाट के नज़दीक से बिल्कुल सीधी ऊँचाई की तरफ बढ़ते हुए, पूर्व दिशा में पठार की तरफ ढलान में चली जाती हैं। जुन्नार, कन्हेरी और कार्ले पर इनमें अनेक मार्ग (दर्रों) श्रेणियाँ स्थित हैं। यह मार्ग इस बन्दरगाह को पश्चिमी समुद्र तट को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्गों के रूप में उपयुक्त रहे हैं। पश्चिमी घाटों के दक्षिणी किनारे

पालघाट दर्रा है जो कि पश्चिम समुद्री तट को कावेरी घाटी से जोड़ता है और जिसने प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत–रोम (इंडो–रोम) व्यापार में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। पूर्वी घाट धीरे–धीरे पठार और समुद्रतटीय मैदानी क्षेत्र में ढलते चले जाते हैं।

समुद्री तट मैदानी क्षेत्र में पूर्व में तमिलनाडु और पश्चिम में केरल प्रदेश आते हैं। तमिलनाडु में नदियाँ मौसमी होती हैं जिसके परिणामस्वरूप प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र के लोग तालाबों द्वारा सिंचाई पर अधिक निर्भर रहे हैं। फिर भी, कावेरी डेल्टा क्षेत्र मानव के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा है। इसने चावल की खेती के लिए अवसर प्रदान किए और यहीं पर

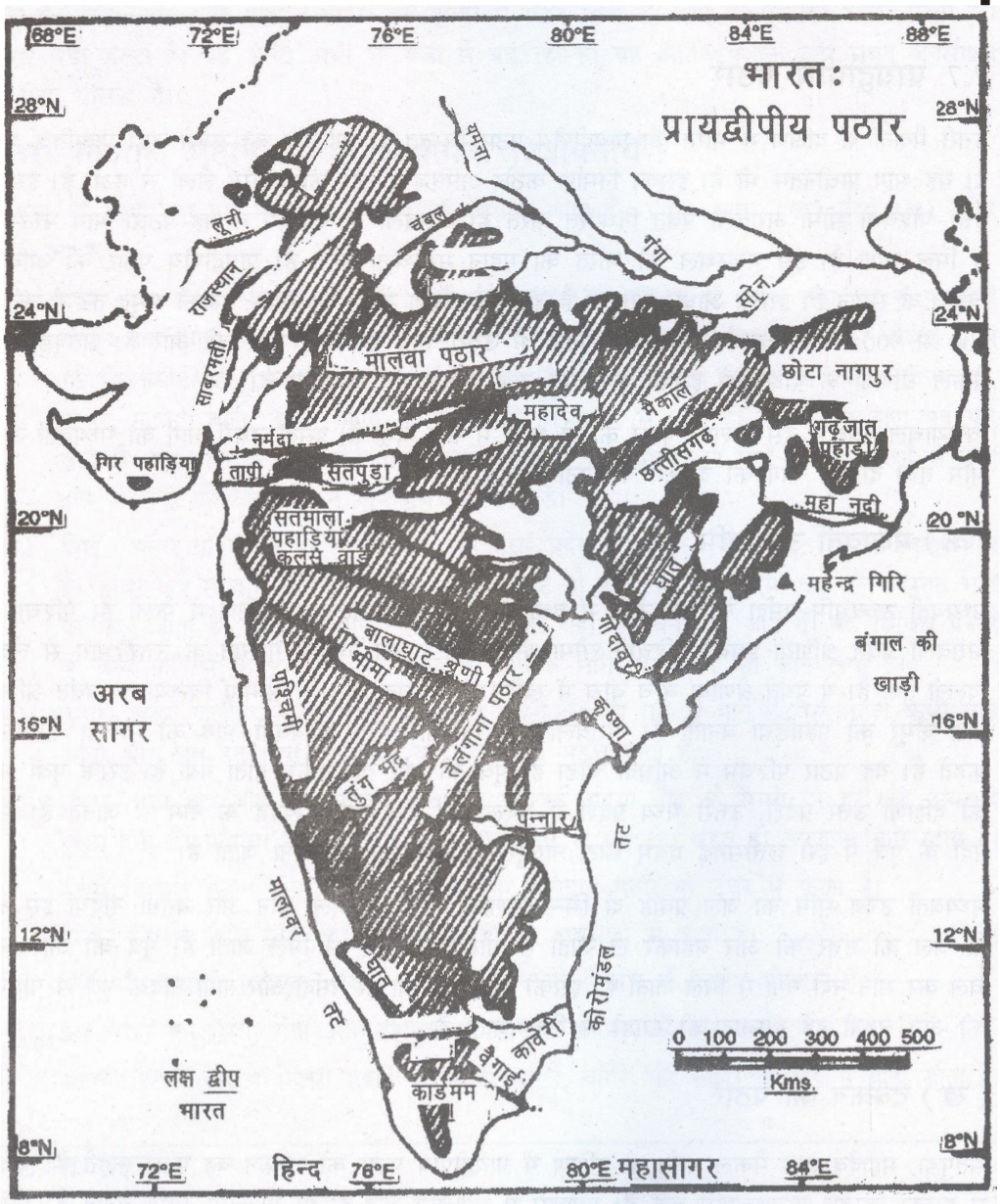

मानचित्र 2.2 प्रायद्वीपीय भारत

आपकी टिप्पणियाँ

ही प्रागैतिहासिक काल की संगम सभ्यता का विकास दिखाई दिया। तमिल क्षेत्र में इन्होंने अपनी एक भिन्न भाषायी सांस्क तिक पहचान विकसित की।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित मुख्य पहाड़ी रास्तों के नाम लिखें?

2. उत्तर वैदिक काल में गंगा नदी के ऊपरी मैदानी क्षेत्र में कौन निवास करते थे?

3. मध्य गंगा मैदानी क्षेत्रों में किन दो धर्मों का जन्म हुआ?

4. किस प्रदेश में प्रागैतिहासिक काल से तालाबों द्वारा सिंचाई लोकप्रिय थी?

5. कावेरी डेल्टा किस फसल के लिए प्रसिद्ध है?

6. किन्हीं दो ऐसी जनजातियों का नाम लिखें जिन्होंने प्राचीन काल में उत्तर–पश्चिमी पहाड़ी मार्गों से भारत में प्रवेश किया?

7. किस क्षेत्र को इस महाद्वीप का खाद्य केन्द्र कहा जाता है?

2.4 पर्यावरण का प्रभाव

किसी भी क्षेत्र में लोगों के आवास की स्थिति इस बात पर निर्भर होती है कि उस स्थान के परिवेश (पर्यावरण) की स्थिति कैसी है। पर्यावरण हमारे आसपास की परिवेशीय स्थितियाँ या वातावरण होता है जिसमें विभिन्न प्रकार की जातियाँ (मानव, पशु और पेड़–पौधे) जीवित रहते और काम करते हैं। पर्यावरण में मुख्य रूप से किसी स्थान का वातावरण, भू–भाग, पेड़–पौधे और पशु (वनस्पति और प्राणिजगत आदि) शामिल होते हैं। आइए अब हम देखते हैं कि प्राचीन काल से लेकर आज तक पर्यावरण ने लोगों के जीवन और इतिहास को किस प्रकार प्रभावित किया है। लोगों के स्थायी आवास के लिए अर्ध–शुष्क क्षेत्र अधिक उपयोगी होते हैं। उदाहरण के लिए सिंध क्षेत्र ,जहाँ पर प्राचीन काल में इसी प्रकार का वातावरण रहा है, में सम द्ध हड़प्पा सभ्यता विकसित हुई, इसने शहरी आवास विकसित कराने में भी सहयोग दिया। इसी प्रकार बिहार में पाटलीपुत्र का विकास और मगध के महत्व को भी वहाँ की भौतिक विशेषताओं और पर्यावरण के मद्देनजर इनके परस्पर संबंधों के अनुरूप परिभाषित किया जा सकता है। पाटलीपुत्र गंगा, सोन और गंडक नदियों से घिरा था जिन्होंने इस स्थान को नैसर्गिक सुरक्षा प्रदान करने के

साथ–साथ आंतरिक संचार की सुविधा भी उपलब्ध करवाई। इसके अतिरिक्त उपजाऊ सिंध–गंगा के मैदानी क्षेत्रों ने यहाँ घनी आबादी के निवास बनाए रखने में सहायता की।

पर्यावरणीय परिस्थितियाँ किसी क्षेत्र के संभावित संसाधनों को भी निर्धारित करती हैं। वनांचल क्षेत्र लकड़ी का बड़ा स्रोत हो सकते हैं तो समुद्र तटीय क्षेत्र समुद्री उत्पादों के स्रोत हो सकते हैं। चटट्ानों से भरपूर पहाड़ी क्षेत्र, जिनमें खनिज अयस्क (कच्ची धातुएँ) भी शामिल हैं, धातु विज्ञान के विकास में सहायक हो सकता है, जैसे मगध लोहे की कच्ची खानों के नजदीक और छोटा नागपुर पठार के क्षेत्र में पत्थर के स्रोत (उद्गम स्थलों) और लकड़ी के क्षेत्र के नज़दीक स्थित था। इस वजह से मगध की स्थिति मजबूत हुई।

जीवन के रहन–सहन और आहार–व्यवहार भी पर्यावरणीय परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। नदियों के मैदानी क्षेत्रों में कछार वाली मिट्टी बाढ़ से प्रभावित होती है। मिट्टी की उपजाऊ शक्ति अधिक पैदावार में सहायक होती है। मिट्टी की किस्म किसी स्थान की फसल पद्धति को भी निर्धारित करती है। जैस, काली मिट्टी कपास की खेती करने के लिए बहुत अच्छी होती है। बढ़ते उत्पादन के फलस्वरूप वस्तुओं के परस्पर लेन–देन की गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है जिससे बड़े पैमाने पर व्यापार विकसित होता है।

जलमार्ग की सुविधा से सम्पन्न नदियों वाले क्षेत्रों में विकसित व्यापार और संचार नेटवर्क देखने में आए हैं। जातक और अन्य उपलब्ध हमारी प्राचीन साहित्यिक पुस्तकों में प्राचीन भारत में अनेक जलमार्गों के होने के उल्लेख मिलते हैं। इसी प्रकार समुद्र तटीय जलमार्ग विभिन्न सुदूर देशों से व्यापार की प्रगति को बढ़ावा देते हैं। पहाड़ी मार्ग इस संदर्भ में बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। उदाहरण के रूप में पालघाट दर्रा ने पूर्व और पश्चिमी समुद्री तट को आपस में जोड़ा और प्राचीन काल में भारत–रोम व्यापार करने में सहायता की।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि किसी क्षेत्र की भौतिक विशेषताएँ और पर्यावरण उस क्षेत्र की ऐतिहासिक प्रक्रिया का खुलासा करने में सहायक होते हैं। संसाधनों से सम द्ध क्षेत्र महत्त्वपूर्ण थे जबकि जहाँ इन संसाधनों की कमी रही, वहाँ कम विकास हुआ। यह समीक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण है कि आवास पद्धति और जीविका का तरीका स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर निर्भर होता है, जिसके परिणाम पर उस क्षेत्र का तकनीकी विकास निर्भर होता है।

पाठगत प्रश्न 2.2

1. पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) को प्राक तिक सुरक्षा प्रदान करने वाली नदियों के नाम लिखें?

   _____

2. मगध को लौह अयस्क और लकड़ी की आपूर्ति किस क्षेत्र से होती थी?

   _____

आपकी टिप्पणियाँ

3. कपास की खेती के लिए किस प्रकार की मिट्टी उत्तम है 'काली, लाल या रेतीली'?

4. कौन से प्रसिद्ध पहाड़ी मार्ग ने भारत के पूर्व और पश्चिमी समुद्र तट को परस्पर जोड़ा?

2.5 प्रागैतिहासिक सभ्यताएँ

प्रागैतिहासिक काल हमारे इतिहास की वह अवधि है जिसका कोई लिखित वर्णन उपलब्ध नहीं है। इसलिए उन सभ्यताओं के संबंध में हमारा ज्ञान केवल पुरातात्विक खुदाई में मिली सामग्री पर आधारित है। इस समय में रहने वाले प्राचीन मानव पत्थर के औजार बनाकर और पत्थर से बनाई गई चीजें उपयोग में लाते थे जो उन स्थलों के आसपास पाई गई है। यह औजार उन्हें शिकार करने और अपनी भूख शांत करने के लिए खाद्य सामग्री इकट्ठी करने में मदद करते थे। चूँकि इस समय में लोगों द्वारा सबसे पहले उपयोग किए गए औजार पत्थरों से बनाए गए थे, इसलिए मानव विकास के इस चरण को पाषाण युग के नाम से जाना जाता है।

इस अध्याय में हम प्रागैतिहासिक काल के व्यक्ति के शिकारी और भोजन संग्रह करने वाले व्यक्ति से भोजन उत्पादक में परिवर्तित होने के विकास क्रम के अवशेष खोजेंगे। यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ बल्कि इसमें हजारों साल का समय लगा।

2.6 पुरा पाषाण-युग (पैलियोलिथिक) सभ्यता

पैलियोलिथिक शब्द ग्रीक शब्द ''पैलियो'', से लिया गया है जिसका अर्थ है पुराना और ''लिथिक'' जिसका अर्थ है पत्थर से लिया गया है। इसलिए पैलियोलिथिक–युग का अर्थ है पुरा पाषाण–युग। पुरातत्वविदों ने इस सभ्यता का कालखंड दो मिलियन वर्ष पूर्व अत्यन्त नूतन युग (प्लिस्टोसीन एज) को बताया है। प्लिस्टोसीन काल इस युग का वह भौगोलिक काल है जब धरती की सतह बर्फ से ढँकी थी और मौसम इतना ठंडा था कि मनुष्य अथवा वनस्पति किसी का भी जीवित रहना संभव नहीं था। लेकिन उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में, जहाँ बर्फ पिघल गई थी, मानव की प्रागैतिहासिक जातियाँ जीवित रह सकती थीं।

लोग पहाड़ी चट्टानों के आसपास रहते थे और अपनी सुरक्षा के लिए सिर्फ़ पत्थर से बने औजारों का उपयोग करते थे । फिर भी औजार बनाने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली कच्ची सामग्री का चुनाव एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होता था और इस सामग्री की उपलब्धता पर निर्भर होता था, जैसे महाराष्ट्र क्षेत्र में उपलब्ध बेसाल्ट और कर्नाटक क्षेत्र में पाया जाने वाला चूना–पत्थर । औजारों की किस्म और उन्हें गढ़ने की तकनीक की प्रगति की प्रक ति के आधार पर पैलियोलिथिक सभ्यताओं (पाषण युगीन सभ्यताओं) को तीन चरणों में विभाजित किया गया है। ये हैं :– (1) आरंभिक अथवा पुरा पाषाण युग (अर्ली पैलियोलिथिक), (2) मध्य पाषाण युग (मिडल पैलियोलिथिक), और (3) उन्नत या उच्च पाषाण युग।

(क) पुरा पाषाण युग (पैलियोलिथिक) के औजार

पुरा पाषाण युग चरण में मुख्य औज़ार थे हाथ की कुल्हाड़ी, गंडासा और काटने के औजार। ये औज़ार बहुत बेढंगे और भारी थे और पत्थरों से बनाए गए थे. धीरे–धीरे नुकीले और हल्के औज़ार बनाए जाने लगे।

मध्य पाषाण युग के मुख्य औजार थे खप्पचियों की तरह के चपटे औजार (चित्र 2.2)। उत्तर पाषण युग में मूलतः तक्षणी (बूरीन) और कुरेदने वाले (स्क्रैपर्स) औजार होते थे (चित्र 2.3)।

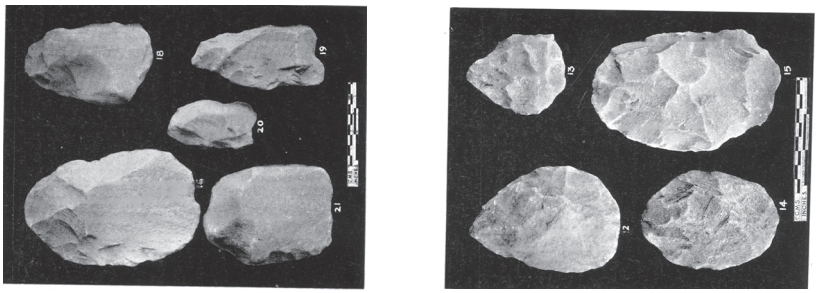

चित्र 2.1 पुरा पाषाण युग के काटने वाले औजार और हाथ की कुल्हाड़ी

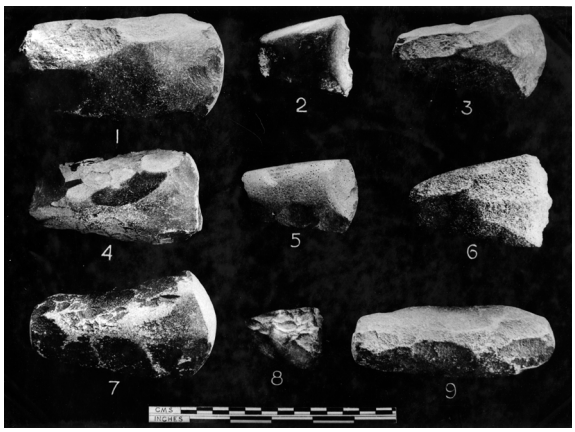

चित्र 2.2 मध्य पाषाण युग के काटने वाले औजार और हाथ की कुल्हाड़ी

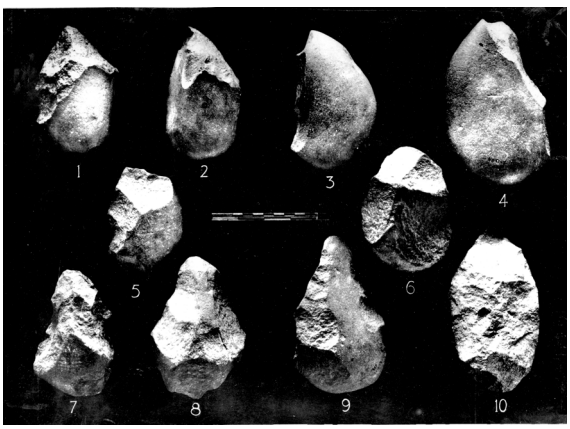

चित्र 2.3 उत्तर पाषाण युग के काटने वाले औजार और हत्थे वाली कुल्हाड़ी

आपकी टिप्पणियाँ

आइए अब हम संक्षेप में ऊपर उल्लिखित कुछ औजारों की मुख्य विशेषताओं और उपयोगों पर विचार करते हैं। हत्थे वाली कुल्हाड़ी में हत्था चौड़ा है और काम करने वाला हिस्सा पतला। पेड़ काटने और जड़ों को खोदने के लिए इनका उपयोग होता था।

आरी का सिरा दो भागों में बँटा होता था और इनका उपयोग पेड़ों के तनों को चीरने के लिए होता था। गंडासा एक मुख्य औजार था जिसका काम करने का एक ही सिरा होता था और इसे काटने के काम के लिए उपयोग में लाया जाता था। बूरिन (तक्ष) पतली खपच्चियों या ब्लेडों की तरह होते थे । इनका उपयोग नरम पत्थरों, हड्डियों या चट्टानों पर खुदाई के काम के लिए किया जाता था। छीलने वाले औजार (स्क्रैपर्स) भी पतली खपचियों के बने होते थे। पेड़ों की छालें और पशुओं की चमड़ी प्राप्त करने के लिए तथा छीलने के काम के लिए इनका उपयोग किया जाता था।

(ख) पाषाण युगीन स्थानों का भौगोलिक विभाजन

पाषाण युगीन स्थलों के भौगोलिक विभाजन से यह संकेत मिलता है कि यह सभ्यता भारतीय उप–महाद्वीप की सम्पूर्ण लम्बाई और चौड़ाई के विस्तार में फैली हुई थी। उत्तर में कश्मीर घाटी और रावलपिंडी (अब पाकिस्तान में) की सोहन घाटी में से प्राचीन पत्थरों के औजार प्राप्त हुए हैं, राजस्थान में लूणी नदी के किनारे के स्थानों पर पत्थर के प्राचीन औजार प्राप्त हुए हैं। पश्चिमी भारत में भी साबरमती, माही और इनकी सहयोगी नदियों के स्थलों पर पत्थरों के प्राचीन औजार मिले हैं। महाराष्ट्र में इनके प्रमुख स्थान रहे हैं, गोदावरी की सहयोगी नदी नेवासा के पास और ताप्ती नदी तंत्र में पटन का पास, मध्य प्रदेश में भीमबेट्का (भोपाल के पास) और होशंगाबाद जिले में आदमगढ़ स्थित चटट्ानी आड़ में पुरा पाषाण–युग और मध्य प्राचीन युग से संबद्ध औजार प्राप्त हुए हैं।

उत्तर प्रदेश में, बेलन घाटी (मोटे तौर पर इलाहाबाद और वाराणसी के मध्य फैला क्षेत्र) इसका बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थल रही है। यहाँ मिले औजारों से प्राचीन पाषाण–युग से लेकर निरंतर आज तक मानवीय व्यवसाय के दर्शन होते हैं।

यदि पूर्व की ओर बढ़ें तो असम और मेघालय (गारो की पहाड़ियाँ) सहित वहाँ के आसपास के क्षेत्र से इतिहास–पूर्व काल की कलाक तियाँ पाई गई हैं। बंगाल, उड़ीसा और बिहार के अनेक स्थानों पर भी प्राचीन पाषाण युग के औजार प्राप्त हुए हैं। प्रायद्वीपीय भारत में आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में प्राचीन पाषाण युग से संबद्ध औजार मिलने के समाचार मिले हैं। तमिलनाडु में इनका मुख्य स्थल रहा है अटिट्रमपक्कम जो चिंगलपुर क्षेत्र में स्थित है। प्राचीन पाषाण युग की जीविका का मुख्य आधार पशुओं का शिकार और फलों और उसकी जड़ों से खाद्य सामग्री संग हित करना रहा है। अन्य शब्दों में, उस युग के लोग मूलतः शिकारी और संग्रहकर्ता थे जिनका कोई स्थायी निवास नहीं होता था।

ऊपर की चर्चा के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इतिहास–पूर्व काल के प्राचीन पाषाण युग की सभ्यताएँ लगभग संपूर्ण भारतीय उप–महाद्वीप में फैली हुई थीं।

औजारों के अध्ययन से संकेत मिलता है कि औजार बनाने की तकनीक में सतत विकास हुआ है जिसने बेहतर संसाधनों की उपलब्धता का मार्ग प्रशस्त किया है।

(ग) जीविकोपार्जन की पद्धति

प्राचीन पाषाण युग के लोगों में जीविकोपार्जन के लिए शिकार और खाद्य सामग्री संग हीत करने का चलन था। उन्होंने शिकार करने, कुतरने/काटने, खोदने और अन्य उद्देश्य के लिए पत्थरों के साधारण औजार बनाए। उन्होंने खानाबदोशों जैसा जीवन बिताया और जहाँ पर भी पानी की आसानी से उपलब्धता के साथ–साथ पेड़–पौधे और पशुओं जैसे संसाधन की बहुलता मिली, उन्हीं स्थानों पर स्थानांतरित होते रहे।

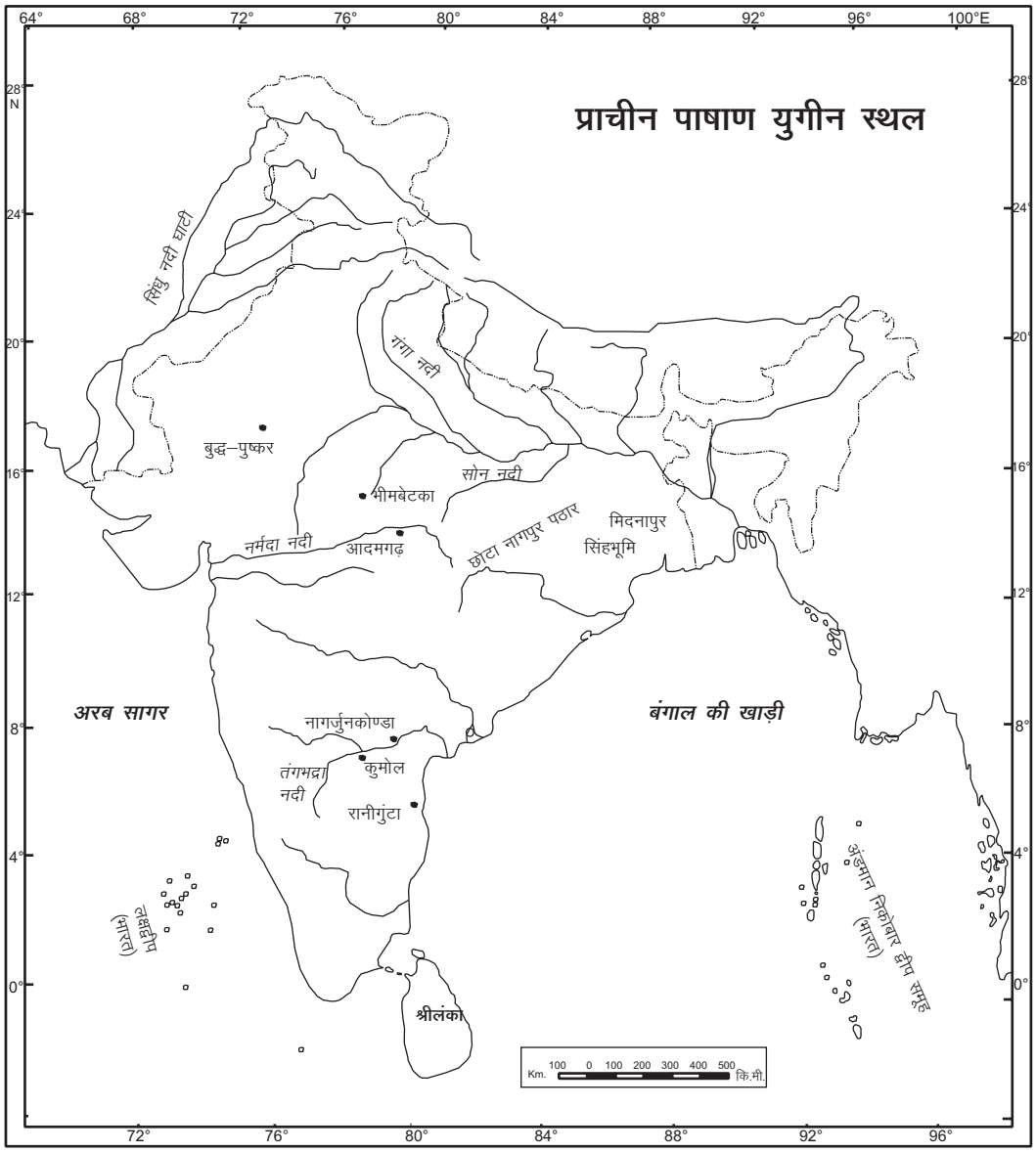

मानचित्र 2.3 प्राचीन पाषाण युगीन स्थल

आपकी टिप्पणियाँ

पाठगत प्रश्न 2.3

1. प्राचीन पाषाण युग में मानव के कौन से दो मुख्य व्यवसाय थे?

2. वे कौन से उद्देश्य थे, जिन्हें पूरा करने के लिए उन्होंने औजार बनाए?

3. पुरा पाषाण युग के मुख्य औजारों के नाम लिखें?
   (क)_____ (ख) _____ (ग) _____

2.7 मध्य पाषाण युगीन सभ्यताएँ (मैसोलिथिक संस्क ति)

मैसोलिथिक शब्द दो शब्दों के संयोजन से बना है, 'मैसो और लिथिक'। ग्रीक भाषा में 'मैसो' का अर्थ है मध्यम और 'लिथिक' का अर्थ है पत्थर, अर्थात इतिहास–पूर्व काल के मैसोलिथिक युग को मध्य पाषाण युग के रूप में पहचाना जाता है। यह समय प्राचीन पाषाण युग और नव पाषाण युग के मध्य का संक्रमणकालिक चरण रहा है। पुरातात्विक खोजों के आधार पर भारतीय महाद्वीप में मध्य पाषाण युग का प्रारम्भ 10,000 ईसा पूर्व के आसपास माना जाता है।

इस अवधि के दौरान तापमान में व द्धि दिखाई दी जिसके परिणामस्वरूप वातावरण में गरमी आई। इन परिवर्तनों की वजह से प्राचीन युग की और बर्फ पिघलती गई जिससे वनस्पति और प्राणी जगत में बहुत से परिवर्तन दिखाई दिए। यद्यपि मनुष्य अभी भी शिकारी और भोजन संग्रहकर्त्ता के स्तर पर ही था परन्तु अब उसने मछली पालन और जानवरों को पालना भी शुरू कर दिया था । भीमबेट्का (भोपाल के पास) में चटट्ानों पर इस काल में की गई चित्रकारी से यह संकेत मिलता है कि लोगों मे कलात्मक रुचि विकसित हो गई थी।

(क) मध्य पाषाण युग के औज़ार

मध्य पाषाण युग में प्रयुक्त किए जाने वाले पत्थर के सूक्ष्म औजार आकार में बहुत छोटे थे और इनकी लंबाई 1 से 8 सें.मी. के बीच अलग–अलग होती थी और इन्हें मोटे तौर पर छीले गए पतली खपचियों जैसे टुकड़ों से बनाए जाता था। इनमें से कुछ औजारों का आकार ज्यामितीय रूप में होता था, जैसे–त्रिकोण, अर्ध–चन्द्राकार और समलंबाकार। इनके औजारों को तीर या भाला बनाने के लिए बांधा या उनमें बैठाया जा सकता था।

(ख) मध्य पाषाण युगीन स्थलों का भौगोलिक विभाजन

मध्य पाषाण युगीन स्थलों के विभाजन से संकेत मिलता है कि मध्य पाषाण युगीन सभ्यताओं का आवास उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम संपूर्ण भारत में मिलता है। इस सभ्यता के प्रमुख स्थल हैं। गुजरात में लंघनाज (जिला मेहसागणा) मध्य प्रदेश में भीमबेट्का (भोपाल के पास), उत्तर प्रदेश में चोपाणी मांडो (इलाहाबाद के पास बेलन

घाटी); पश्चिम बंगाल में बीरभानपुर (जिला बर्दवान), कर्नाटक में संगनाकल्लु (जिला बेल्लारी), और दक्षिणी तमिलनाडु में तूतीकोरिन ।

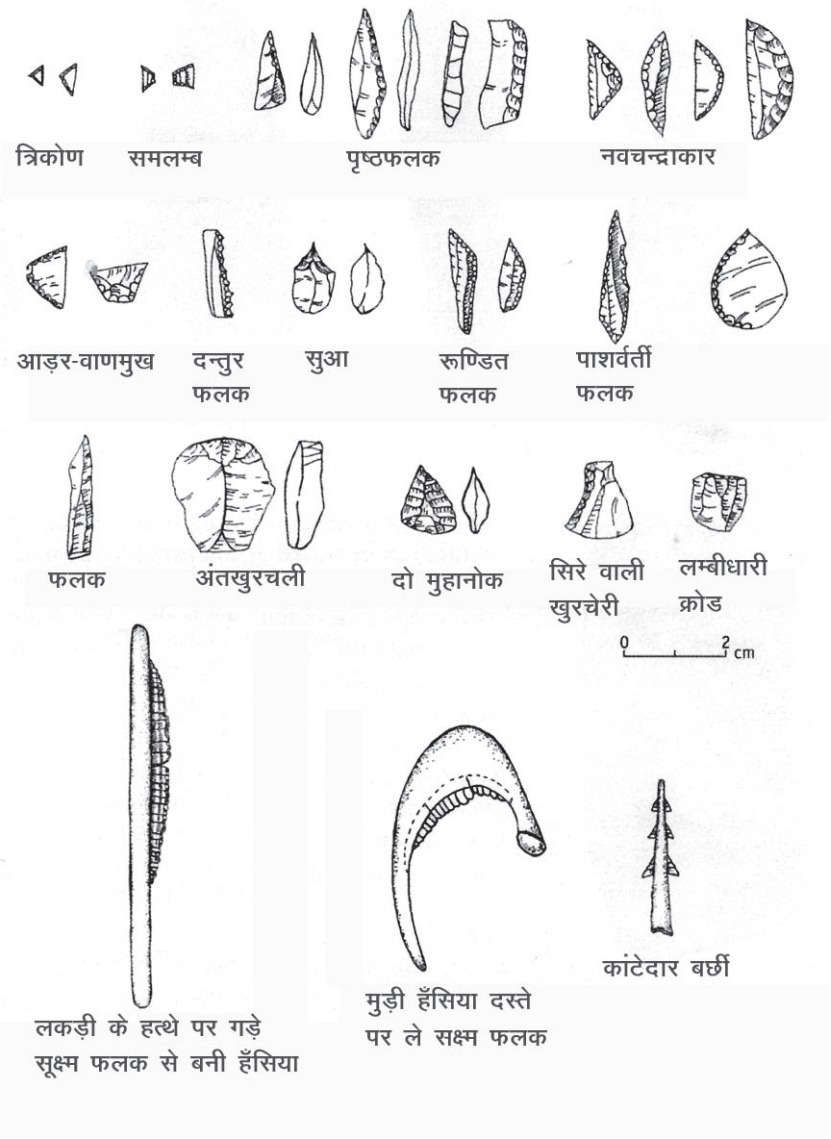

चित्र 2.4 मध्य पाषाण युग के औजार

(ग) जीवन यापन की पद्धति

मध्य पाषाण युग के लोग अभी भी अपना जीविकोपार्जन शिकार और संग्रहण से करते थे, परन्तु अब शिकार के तरीके मे कुछ बदलाव आ गया था, जैसे अब प्राचीन पाषाण युग के बडे जानवरों के स्थान पर छोटे–छोटे पशुओं का भी शिकार होने लगा था, जिन पर धनुषबाण और तीरों से आक्रमण किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त मछलीपालन और पक्षियों के शिकार को भी महत्त्व दिया जाने लगा था। मवेशियों, भेड़ों, बकरी, भैंस, सूअर, चूहे, जंगली सांड, दरियाई घोड़े, कुत्ते, लोमड़ी, छिपकली, मेंढक और मछली आदि प्राणियों के अवशेष मध्य कालीन पाषाण युगीन स्थान से प्राप्त हुए हैं।

पाठगत प्रश्न 2.4

1. मध्य पाषाण युग के औजारों को किस नाम से पुकारा जाता है?

2. मध्य पाषाण युग में निर्मित कुछ औजारों के नाम लिखें?

3. मध्य पाषाण युग के किन्ही दो स्थानों का नाम लिखें?

2.8 नव पाषाण युग की सभ्यताएँ और खाद्य उत्पादों का आगमन

इतिहास–पूर्व अंतिम चरण को नव पाषाण युग का नाम दिया गया है। नियोलिथिक शब्द को ग्रीक शब्द 'नियो' जिसका अर्थ है नया, और 'लिथिक' जिसका अर्थ है, पत्थर से लिया गया है. अतः नियोलिथिक युग' का अर्थ है मानव सभ्यता का 'नव पाषाण युग'। भारतीय उप–महाद्वीप में इसका काल क्रम 8000 बी.सी. (ईसा पूर्व) माना जाता है। 'नियोलिथिक' शब्द का निर्माण जॉन लुब्बॉक द्वारा किया गया था। युग की प्रमुख विशेषता थी, नए किस्म के घिसाई और पॉलिश किए गए पत्थर के औजार। इस काल को पौधों की खेती और घरेलू पशुपालन की शुरुआत के रूप में भी पहचाना जाता है। इसकी वजह से जीवन में स्थायी आवास की शुरुआत हुई और गांवो में आबादी का विकास हुआ। नव पाषाण युग में निम्नलिखिति विशेषताएँ थीं:

(1) क षि संबंधी गतिविधियों का आरम्भ

(2) घरों में पशुपालन

(3) तीखे नुकीले पत्थर के औजारों की घिसाई और उन पर पॉलिश की शुरुआत

(4) पॉटरी (मिटट्ी के बर्तनों) का उपयोग

(क) नव-पाषाणिक क्रांति

व्यक्ति के जीवन में आए महत्त्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों के आधार पर कभी–कभी इस कालावधि को नव पाषाणिक क्रांति का नाम दिया जाता है। पैने और पॉलिश किए गए पत्थर के नए औजारों ने मिटट्ी की जुताई को आसान बना दिया था। इसके साथ–साथ पशुओं को घरों में रख कर पालने का चलन भी शुरू हो चुका था। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप खेतीबाड़ी करने वाली स्थायी जातियों की स्थापना हुई। नव पाषाण युग के चरण में पुनर्विकास ने मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया जिसके फलस्वरूप अनेक विद्वानों ने इन परिवर्तनों के महत्व को दर्शाने करने के लिए 'नव पाषाण कालीन क्रान्ति' (नियोलिथिक रिवॉल्यूशन) का नाम दिया। परन्तु अधिकतर विद्वानों का यह विश्वास है कि यद्यपि यह परिवर्तनश्अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, तथापि इन परिवर्तनों को प्राचीन पाषाण युग और मध्य पाषाण युग के दौरान हुई पिछली प्रगति के संदर्भ में देख जाना चाहिए। अतः इसे 'सतत विकास' माना जाए न कि क्रान्ति।

(ख) नव पाषाण युग के औजार

नव पाषाण युग के औजारों में चिकनी सतह वाले घिसाई के औजार और भली–भांति गोलाई किए हुए नपे तुले आकार के औजार शामिल हैं। घिसाई ने औज़ारें को पैना और पॉलिश किया गया आकार दिया और पॉलिश ने इन औजारों को पहले की अवधि के औज़ारों से अधिक प्रभावी बना दिया। (चित्र 2.5)

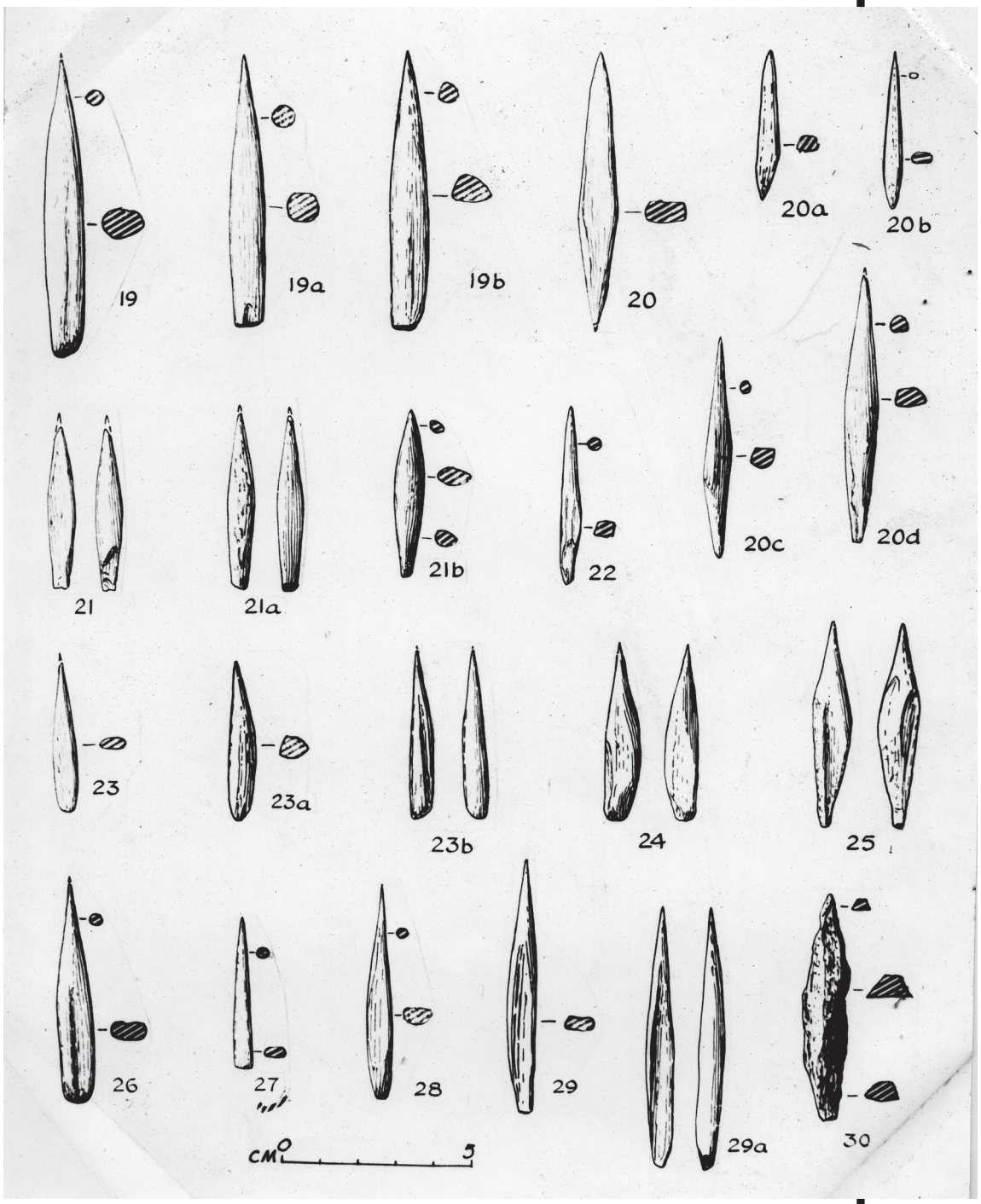

चित्र 2.5 नव पाषाण युग के औज़ार

नव पाषाण युग के घिसाई किए गए औज़ारों में विभिन्न प्रकार की कुल्हाड़ियाँ शामिल है। जिन्हें 'सेल्ट' (आदिम कुल्हाड़ी) कहा जाता है। पत्थर के औजारों के अतिरिक्त इस युग के स्थानों पर विविध प्रकार की हड्डियों से बनी वस्तुएँ, जैसे सुइयाँ, स्क्रैपर, भूमि में छिद्र करने वाले औजार (बोरट) तीरों के अग्रभाग, पेंडेन्ट, चूड़ियाँ और कान के बुंदे आदि भी पाए गए हैं। (चित्र 2.6)

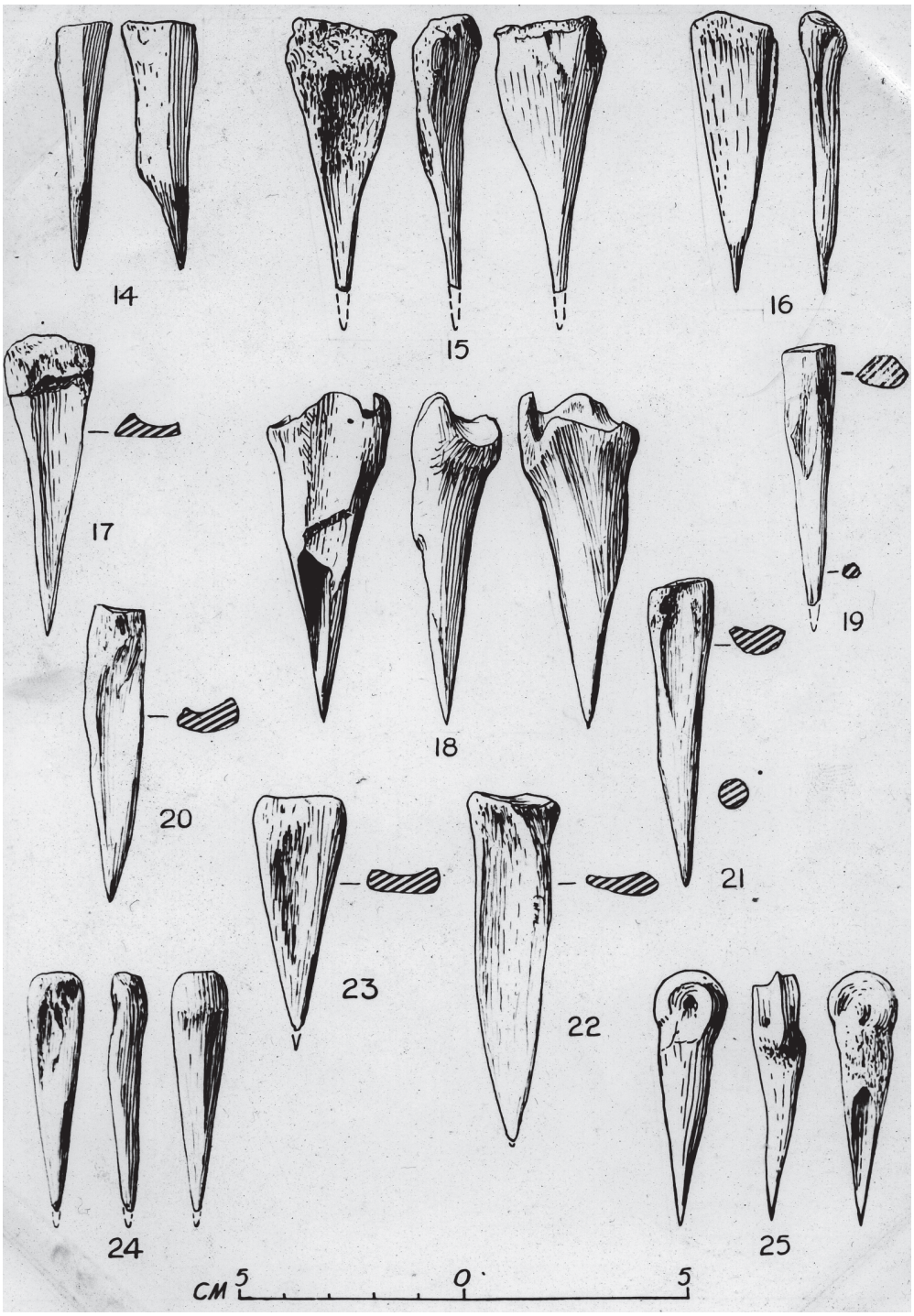

चित्र 2.6 बुर्जाहोम सें मिले नव पाषाण युग के छिद्रक औज़ार

(ग) नव पाषाण युगीन स्थलों का भौगोलिक विभाजन

भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग संपूर्ण भू–भाग में नव पाषाण युगीन स्थलों का विस्तार मिलता है। उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में बलूचिस्तान के कच्छी मैदानी क्षेत्र में मेहरगढ़ ऐसा ही एक उत्क ष्ट स्थल है। मेहरगढ़ में की गई खुदाई से नव पाषाण युग के लोगों द्वारा घरों के निर्माण के साक्ष्य सामने आए हैं। ये घर धूप में सुखाई गई ईंटों से बने थे। इन घरों में छोटे कमरों के विभाजन किए गए थे। गेहूँ, जौ और कपास की खेती किए जाने के प्रमाण इन स्थलों पर पाए गए। कश्मीर घाटी के प्रमुख स्थानों मे बुर्ज़होम और गुफ़्क्राल शामिल हैं। नव पाषाण युग की सभ्यता की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक विशेषता इन जगहों पर रहने के लिए पाए गए गोलाकार या आयताकार गड्ढे। विंध्य पठार के किनारे के साथ–साथ उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद के पास स्थित बेलन घाटी में भी अनेक स्थान हैं, जैसे–कोल्हडीहवा और महागारा।

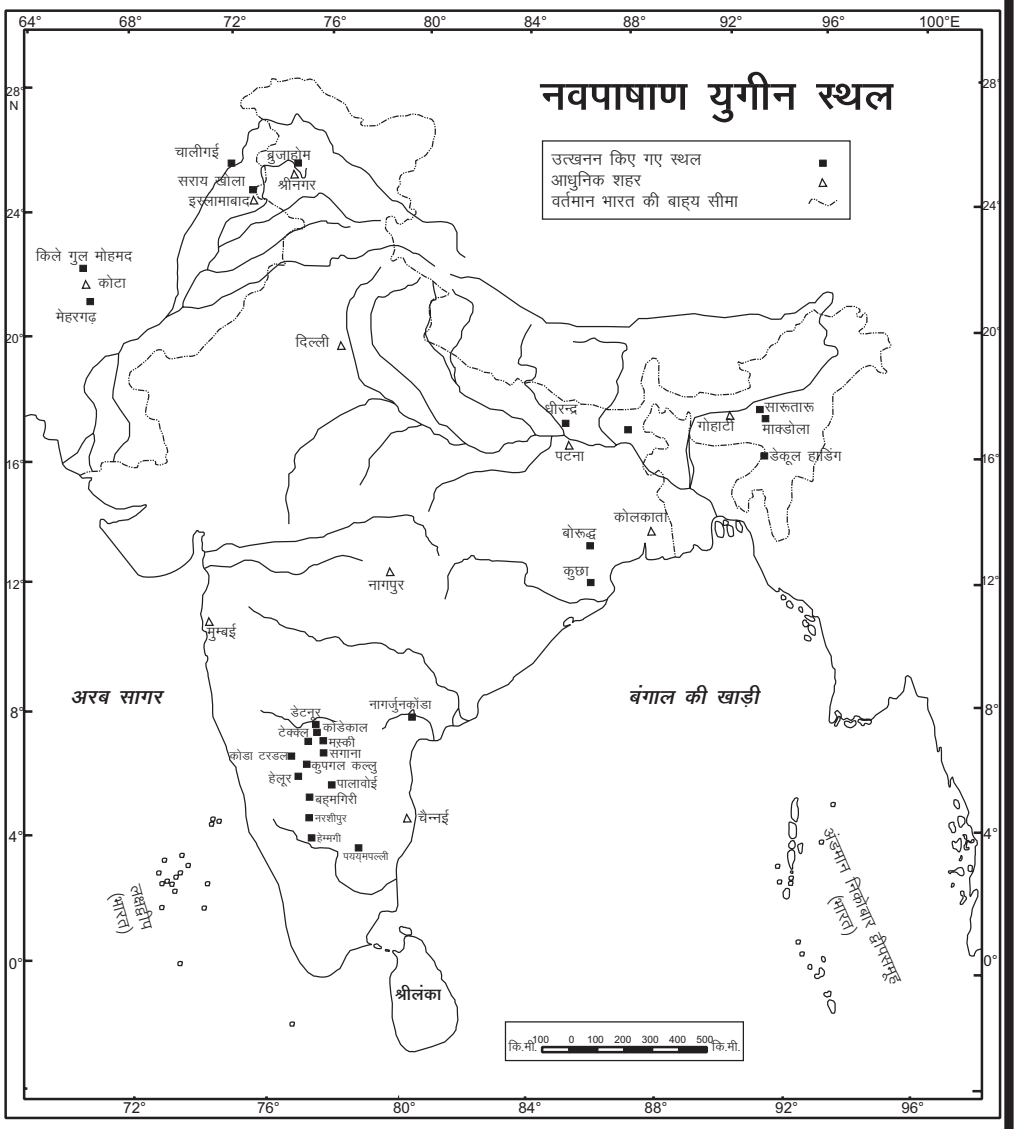

मानचित्र 2.4 नवपाषाण युगीन स्थल

नव पाषाण युग के औजार (पत्थर और हडड़ी दोनों से बने), मिटट्ी के बर्तन, अन्य कलाक तियाँ, फूल–पौधों और प्राणियों के अवशेष इन स्थानों पर मिले हैं। बिहार और मध्य–गंगा घाटी क्षेत्र में चिरंड बहुत ही लोकप्रिय स्थल है। असाम, मेघालय और नागालैंड की पहाड़ियों पर भी अनेक स्थल मौजूद हैं। घिसाई की गई छोटी कुल्हाड़ियों के साथ–साथ मिटट्ी के बर्तन आदि इस क्षेत्र से मिले है। दक्षिण भारत में भीम, क ष्णा, तुंगभद्रा और कावेरी नदियों के किनारे–किनारे अनेक स्थलों/आबादी की खोज की गई है। कुछ प्रमुख स्थल हैं–संगनकल्लु, ब्रहमगिरि, मस्की, पिक्लीहाल, हल्लूर, कर्नाटक में उत्नुर, नागार्जुनकोंडा, आंध्र प्रदेश में बुडिहाल और तमिलनाडु में पल्ली। इन स्थानों पर खेती और पशुपालन के भी प्रमाण मिले हैं। रागी दक्षिण भारत के गांवों में उगाई गई सबसे प्राचीन फसल थी।

(घ) <u>जीविकोपार्जन की पद्धति</u>

नव पाषाण चरण में खेती–बाड़ी का आगमन बहुत ही महत्वपूर्ण परिवर्तन था। भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर इस काल के लोगों ने विविध प्रकार की फसलें उगाईं जैसे गेहूँ, जौ, दालें आदि। खेती–बाड़ी के काम ने पशुपालन को गति दी। शिकार अभी भी लोगों का मुख्य व्यवसाय था। लोगों द्वारा घरों में पाले गए पालतू जानवरों में भेड़, बकरी, गाय–भैंस आदि शामिल थे, तो शिकार किए गए जंगली जानवरों में थे सूअर, नीलगाय और चिंकारा आदि। नव पाषाण युग के लोगों द्वारा बनाए गए विविध प्रकार के पत्थर के औजारों के संबंध में पहले ही चर्चा की जा चुकी है। नियोलिथिक काल के लोगों ने मिट्टी के बर्तन भी पहले हाथ से बनाए और बाद में चाक पहिये पर बनने लगे और इन्हें बड़ी–बड़ी भटिट्यों में पकाया भी गया। अनाज भंडारण के लिए यह मुख्य साधन थे। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि नियोलिथिक सभ्यताओं को विशेष रूप से शिकारी से संग्रहकर्त्ता और संग्रहकर्त्ता से पेड़–पौधों की खेती–बाड़ी करने और पशुपालन करने वाले लोगों में परिवर्तित होने वाले जनसमूह के रूप में पहचाना जाता है। पॉलिश किए गए नए औजारों ने मानवों के लिए खेती–बाड़ी, शिकार करने और अन्य गतिविधियों से संबद्ध कामों को आसान कर दिया था। इसके परिणामस्वस्प खाद्य संसाधनों की बहुतायत में उपलब्धता से जनसंख्या में भी बढ़ोतरी दर्ज की गई और बढ़ती आबादी के कारण गांवो की स्थायी आबादियों में भी व द्धि हुई। नव पाषाण युग की सभ्यताओं ने ऐसी परिस्थितियां पैदा कीं, जिनसे बाद के समय में शहरों और कस्बों के विकास में सहायता मिली।

पाठगत प्रश्न 2.5

1. नव पाषाण शब्द की रचना किसने की?

   _____

2. नव पाषाण सभ्यताओं की प्रमुख विशेषताएँ लिखें:

   (क) _____

(ख) _____

(ग) _____

(घ) _____

3. उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के किसी नव पाषाण युगीन स्थल का नाम लिखें?

_____

2.9 प्रागैतिहासिक कला

चटट्ानों पर चित्रकारी मध्य पाषाण (मैसोलिथिक) युग के लोगों की बहुत ही महत्त्वपूर्ण और भिन्न विशेषता थी यद्यपि इसकी शुरुआत के संकेत उत्तर पुरापाषाण काल मे भी पाए गए हैं। यह चित्रकारी चटट्ानों में बनाए गए बसेरों की दीवारों पर बनाई गई थी और इनमें से अधिकतर चित्रकारी मध्य प्रदेश में भीमबेट्का में पाई गई हैं। इनसे मध्य पाषाण लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन की झांकी मिलती है। चित्रकारी में पाए गए चित्रों का मुख्य विषय है–शिकार, मछली पकड़ना और भोजन एकत्र करना। जंगली सूअर, भैंस, बकरी, और नीलगाय आदि के चित्र आमतौर पर मिलते हैं (चित्र 2.7)। चटट्ानों पर की गई चित्रकारियों में बच्चे का जन्म, बच्चों का पालन–पोषण और दफ़नाये जाने की रीतियाँ पूरी किए जाने संबंधी चित्र भी दर्शाये गए हैं। एक समूह में रहकर शिकार करने के द श्यों से संकेत मिलता है कि मध्य पाषाण लोग समूह बनाकर रहते थे। अतः हम यह कह सकते हैं कि मध्य पाषाण कालिक समाज पुरापाषाण युग के लोगों सें अधिक स्थिर था यद्यपि शिकार–संग्रहण अभी भी इनका मुख्य पेशा था।

चित्र 2.7 प्रागैतिहासिक कला

पाठगत प्रश्न 2.6

1. चटट्ानों पर चित्रकारी अथवा भित्ति चित्र किस काल की भिन्न विशिष्ट कला थी?

2. मध्य प्रदेश के उन स्थानों के नाम लिखें जहाँ अधिकतम संख्या में चटट्ानों पर बनाई गई चित्रकारी पाई गई है?

3. प्रागैतिहासिक भित्ति–चित्र कला में किन विषयों पर मुख्य तौर पर प्रकाश डाला गया है, उनका उल्लेख करें?

आपने क्या सीखा

भारत के इतिहास पर इसकी भौगोलिक विशेषताओं और पर्यावरण की परिस्थितियों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। विभिन्न क्षेत्रों को उनकी भिन्न स्थलीय व रूपरेखीय विशेषताओं से पहचाना जाता है जो उन क्षेत्रों में हुए ऐतिहासिक परिवर्तनों को निर्धारित करती हैं। हिमालय ने हमें हमलावरों और कठोर शीत पवनों से सुरक्षा प्रदान की है। पहाड़ी दर्रों ने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्क तिक क्रियाकलापों के लिए मार्ग उपलब्ध कराए। उत्तर भारत की नदी के उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों ने भरपूर क षि उत्पादों की पैदावार में सहायता की जिसके परिणामस्वरूप छठी सदी ईसा पूर्व में शक्तिशाली प्रदेशों के बनने में सहायता प्रदान की। पठार क्षेत्र समुद्रतटीय मैदानी क्षेत्र और प्राय– द्वीपीय भारत के पहाड़ी क्षेत्रों ने क षि से संबद्ध आबादियों की स्थापना और प्राचीन काल से ही विदेशों से संपर्क साधने के लिए प्रेरित किया। विभिन्न परिवेशीय परिस्थितियों और विविध संसाधनों की उपलब्धता के परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न सामाजिक–आर्थिक और सांस्क तिक संरचनाओं की स्थापना हुई।

प्रागैतिहासक काल से लेकर आज तक मानव सांस्क तिक विकास के अनेक चरणों से गुजरा है। पुरातत्विक स्रोतों ने इस महाद्वीप के विभिन्न भागों में अनेक स्थानों पर मानव के अस्तित्व और उनकी जीविकोपार्जन पद्धतियों का परचम दर्शाया है। पुरा पाषाण और मध्य पाषाण काल में वह शिकारी–संग्रहकर्ता था। नवपाषाण काल आते–आते उसने फसलों की खेती–बाड़ी करना और पशुपालन का काम सीखा। इन समय में वह मिट्टी के बर्तन बनाना भी सीख चुका था। इन विकासों के परिणामस्वरूप गांवों में आबादियों की स्थापनाएँ भी विकसित होने लगी थीं। विभिन्न समय में उपयोग किए जाने वाले पत्थर के औजारों में भी परिवर्तन आ गया था। पुरा पाषाण युग के कुंद औजारों ने नव–पाषाण युग तक आते–आते पैने और पॉलिश किए गए औजारों का रूप ले लिया था। मध्य पाषाण युग (मैसोलिथिक) युग को लघु–पाषाण नाम के अति सूक्ष्म पत्थर के औजारों के लिए विशेष रूप से पहचाना जाता है। अन्य शब्दों मे कहें तो पुरा पाषाण युग का शिकारी–संग्रहकर्त्ता मानव नव–पाषाण काल तक आते–आते क्रमिक खाद्य उत्पादक के रूप में विकसित हो गया था।

पाठांत प्रश्न

1. भारत के मानचित्र पर निम्नलिखित को चिह्नित करें?
   (1) हिमालयी श्रंखला
   (2) पूर्वी और पश्चिमी घाट
   (3) नदियाँ गंगा, नर्मदा, और कावेरी
   (4) अरिकमेडु (पांडिचेरी), तामलुक (ताम्रलिप्ति) और भड़ूच (भरोच)
   (5) पाटलीपुत्र (पटना) और पालघाट
   (6) आदमगड़, भीमबेट्का और कोलडिहवा
2. हिमालय क्षेत्र और प्रायद्वीपीय भारत के संदर्भ में भारत की भौगोलिक विशेषताओं के भारत के इतिहास पर पड़े प्रभाव का आकलन करें।
3. किसी क्षेत्र की परिवेशीय परिस्थितियाँ वहाँ के संभावित संसाधनों का निर्धारण कैसे करती हैं? उदाहरण देकर समझाएँ?
4. पुरा पाषाण युग के दौरान उपयोग किए जाने वाले औजारों की प्रमुख विशेषताएँ और उपयोग लिखें?
5. मध्य पाषाण काल में हुए जलवायु के परिवर्तनों ने शिकार की पद्धतियों में कैसे परिवर्तन संभव किया?
6. नव पाषाण युग के भौगोलिक विभाजन का उल्लेख करें?
7. नव पाषाण काल के लोगों के जीवन की एक झांकी प्रस्तुत करें?
8. कुछ विद्वान इस काल खण्ड के लिए 'नव पाषाणिक क्रांति' शब्द का उपयोग क्यों करते हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. गोमल पास (दर्रा), बोलन पास (दर्रा), और खैबर पास (दर्रा)
2. आर्य लोग
3. (1) जैन धर्म (2) बौद्ध धर्म
4. तमिलनाडु
5. चावल
6. कुषाण और हूण
7. सिंधु नदी के मैदानों में पंजाब और सिंध

2.2

1. गंगा, सोन और गंडक
2. छोटा नागपुर
3. काली
4. पालघाट दर्रा (मार्ग)

2.3

1. शिकार, संग्रहण
2. शिकार, कटाई, खुदाई और अन्य प्रयोजन
3. (क) हत्था कुल्हाड़ी (ख) विदारक (क्लीवर) (ग) कर्न्तक (चॉपर, गंडासा)

2.4

1. सूक्ष्म–पाषाण (पत्थर के सूक्ष्म औजार)
2. त्रिकोण, अर्धचंद्रकार और टिपेज़िज (समलंब)
3. भीमबेट्का और चौपाणी मांडो

2.5

1. जॉन लुब्बॉक
2. (क) क षि संबंधी गतिविधियो का प्रारंभ

   (ख) पशुओं का घरों में पालन

   (ग) पत्थर के औजारों की घिसाई और पॉलिशिंग

   (घ) मिटट्ी के बर्तनों का उपयोग
3. मेहरगढ़

2.6

1. मध्य पाषाण युग
2. भीमबेट्का
3. शिकार, मछली पकड़ना, भोजन एकत्र करना, बच्चे का जन्म, बच्चे का पालन–पोषण और दफ़नाने की रीति।

<u>पाठांत प्रश्नों के संकेत</u>

1. मानचित्र 2.1 और 2.2 देखें
2. अनुच्छेद 2.1 और 2.3 देखें
3. अनुच्छेद 2.4 देखें

4. अनुच्छेद 2.6 (क) देखें
5. अनुच्छेद 2.7 (ग) देखें
6. अनुच्छेद 2.8 (ग) देखें
7. अनुच्छेद 2.8 (घ) देखें
8. अनुच्छेद 2.8 (क) देखें

शब्दावली

आर्य	–	घुमन्तू मानवजाति जो मध्य एशिया से आई।
बट्ट एंड	–	किसी औजार का चौड़ा सिरा जो आमतौर पर हत्थे के काम आता है।
सेल्ट	–	एक प्रकार की पत्थर की कुल्हाड़ी जिसे नियोलिथिक काल में बनाए गया ।
जीव–जन्तु	–	किसी भी क्षेत्र का प्राणी–जीवन
पेड़–पौधे	–	किसी भी क्षेत्र का वानस्पतिक जीवन
जातक	–	बौद्ध काल की पुस्तकें जिनमे बुद्ध के जीवन से संबंधित कथाएँ हैं।
मध्य पाषाण	–	मध्य पाषाण युग में लोगों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले बहुत ही सूक्ष्म और पैने औज़ार
दर्रा	–	पहाड़ों के मध्य बने खाली स्थान/मार्ग जो पहाड़ के दूसरी तरफ पहुचँने की सुविधा प्रदान करते हैं।
प्रागैतिहासिक	–	हमारे इतिहास का वह कालखण्ड जिसका कोई लिखित आलेख नहीं है।